



न्यायालय

सहायक कलक्टर/उपखण्ड अधिकारी

गुढामालानी-बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी -केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)

वाद संख्या:- 2024 / 110

दर्ज तिथि:-26.03.2024

1. नारणाराम पुत्र मूलाराम
2. भोजाराम पुत्र मूलाराम
3. धनाराम पुत्र मूलाराम
4. राणाराम पुत्र भानाराम
5. खेताराम पुत्र भानाराम
6. जमनादेवी पत्नी गोमाराम
7. रामूदेवी पत्नी तेजाराम
8. पनाराम पुत्र तेजाराम
9. टीकमाराम पुत्र पोकराराम
10. मदनाराम पुत्र पोकराराम
11. गंगादेवी पत्नी पोकराराम

समस्त जाति जाट निवासी खारडी बेरी तहसील नौखड़ा जिला बाड़मेर

.....प्रार्थीगण

बनाम

1. डालूराम पुत्र चैनाराम जाति जाट निवासी खारडी बेरी तहसील नौखड़ा जिला बाड़मेर
2. शाखा प्रबंधक आरएमजीबी सड़ा तहसील सिणधरी जिला बालोतरा।
3. राजस्थान सरकार जरिए तहसीलदार नौखड़ा

.....विप्रार्थीगण

उपस्थित अधिवक्ता

प्रार्थी:- श्री जोगराज पोटलिया

अप्रार्थीगण:-श्री डालूराम चौधरी

प्रार्थना-पत्र अन्तर्गत धारा-251ए

राजस्थान काश्तकारी अधि.-1955

:-निर्णय:-

निर्णय तिथि:-10.02.2025

1. आज यह पत्रावली प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 251-क राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 वास्ते निर्णय पेश हुई। प्रकरण का सुक्ष्म वृतान्त इस प्रकार से है कि प्रार्थी द्वारा राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 251-'क' के अन्तर्गत एक प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर निवेदन किया है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी 676 / 252,



672 / 252, 675 / 252, 669 / 252 मौजा खारड़ी बेरी पटवार हल्का धोलानाडा तहसील नोखड़ा में अवस्थित है। प्रार्थी की आराजी तक पहुँच के प्रयोजन के लिए अप्रार्थीगण की आराजी हाल खसरा संख्या 247 मौजा खारड़ी बेरी पटवार हल्का धोलानाडा तहसील नोखड़ा से होते हुए आवागमन करते आए हैं। परंतु अप्रार्थीगण द्वारा अपनी खातेदारी आराजी में फसल करने से प्रार्थी का रास्ता अवरुद्ध हो जाता है। इससे रास्ते को लेकर भारी विरोध रहता है एवं झगड़े की संभावना बनी रहती है। उक्त रास्ते के अतिरिक्त प्रार्थी की आराजी तक वर्तमान में कोई रिकॉर्डेड रास्ता चालू नहीं है। अतः खसरा संख्या 247 मौजा खारड़ी बेरी पटवार हल्का धोलानाडा तहसील नोखड़ा के सेढे से होकर प्रार्थी की आराजी तक नवीन रिकॉर्डेड रास्ता हेतु अनुतोष चाहा गया है। अंत में प्रार्थी की आराजीयात तक कोई रिकॉर्डेड रास्ता दर्ज रिकॉर्ड नहीं है तथा उक्त आवेदित रास्ते के अतिरिक्त अन्य कोई लघुत्तम मार्ग का विकल्प नहीं होने के कारण उक्त आवेदित रास्ते को रिकॉर्ड में दर्ज कर प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र स्वीकार किये जाने का निवेदन किया।

जवाब / रिपोर्ट

2. प्रार्थना पत्र दर्ज रजिस्टर किया जाकर अप्रार्थीगण को जरिये नोटिस तलब किया गया। अप्रार्थीगण द्वारा उपस्थित न्यायालय होकर जवाब प्रस्तुत कर निवेदन किया कि प्रकरण में तहसीलदार नोखड़ा द्वारा तैयार की गई मौका रिपोर्ट बिना अप्रार्थी को सूचना दिये व बिना मौका देखे तैयार की गई है। साथ ही तहसीलदार नोखड़ा द्वारा तैयार की गई मौका रिपोर्ट द्वारा प्रस्तावित मार्ग पर अप्रार्थी के निवास ढाणी बनी हुई है। साथ ही प्रार्थी द्वारा बेवजह अप्रार्थी से रास्ता चाहा गया है। जबकि प्रार्थी व अन्य सहखातेदारों का मूल खसरा 252 था। जिसमें से विभाजन द्वारा प्रार्थीगण का अलग खसरा कायम किया गया है। अतः प्रार्थी को मूल खसरे के विभाजन करवाते समय रास्ता दर्ज करवाना चाहिए था। अब प्रार्थी अप्रार्थी के खेत से होकर रास्ता दर्ज करवाने के अधिकारी नहीं है। साथ ही प्रार्थी को खसरा संख्या 248 / 2 के नजदीकी विकल्प से होकर रास्ता मौके पर चालू है। अतः प्रार्थी को रास्ते की आत्यांतिक आवश्यकता नहीं है। साथ ही प्रार्थी को खसरा संख्या 248 / 2 में से होकर लघुत्तम मार्ग का विकल्प उपलब्ध है। अतः प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र खारिज किया जावे।

3. प्रकरण में तहसीलदार नोखड़ा से हाजा कार्यालय के पत्रांक / कोर्ट / आरए / 2024 / 1630 दिनांक 18.09.2024 द्वारा राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम-1955 के नियम-68 लगायत 70 के अनुसार पुनः मौका जाँच रिपोर्ट तलब की गई। प्रकरण में तहसीलदार नोखड़ा द्वारा पत्रांक / कोर्ट / आरए / 2024 / 1630 दिनांक 18.09.2024 के अनुसार प्रेषित मौका रिपोर्ट तैयार करने में अपनायी गई प्रक्रिया का विवरण निम्न प्रकार है:-

प्रक्रिया हेतु प्रावधान	अपनायी गई प्रक्रिया
<i>Sub-Divisional Officer shall either inspect the site himself or</i>	भू-अभिलेख निरीक्षक आडेल मय पटवारी मौका निरीक्षण किया जाकर मौका रिपोर्ट तैयार की गई।
<i>get it inspected by an</i>	प्रकरण में दिनांक 16.09.2024 को भू-अभिलेख द्वारा मय

जिरह

4. प्रकरण में विद्वान अभिभाषक प्रार्थी की जिरह सुनी गई। अभिभाषक प्रार्थी ने दौराने-ए-जिरह प्रार्थना-पत्र में अंकित तथ्यों को दौहराते हुए प्रार्थी की आराजीयात तक कोई रिकॉर्डेड रास्ता दर्ज रिकॉर्ड नहीं है तथा उक्त आवेदित रास्ते के अतिरिक्त अन्य कोई लघुत्तम मार्ग का विकल्प नहीं होने के कारण उक्त आवेदित रास्ते को रिकॉर्ड में दर्ज कर प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र स्वीकार किये जाने का निवेदन किया। अभिभाषक अप्रार्थी ने दौराने-ए-जिरह अपने जवाब के तथ्यों को दौहराते हुए प्रार्थी के प्रार्थना-पत्र को खारिज करने का निवेदन किया।

कानूनी-प्रावधान

5. प्रकरण में प्रार्थना पत्र के साथ तहसीलदार की मौका-रिपोर्ट का अवलोकन किया गया। बहस पर मनन किया गया। प्रकरण में तथ्यों का गहन विश्लेषण से पूर्व राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-'क' का उद्धरण यहाँ प्रतीत होता है-

251A. Laying of underground pipeline or opening a new way through another khatedar's holding or enlarging the existing way. - (1) Where -

(a) a tenant intends to lay an underground pipeline through the holding of another khatedar for the purpose of irrigation of his holding; or

(b) a tenant or a group of tenants intend to have a new way, or enlargement or widening of an existing way, through the holding of another khatedar to have access to his holding or, as the case may be, their holdings of and the matter is not settled by mutual agreement, the tenant or the tenants, as the case may be, may apply for such facility to the Sub-Divisional Officer concerned, and the Sub-Divisional Officer, if he is satisfied after a summary inquiry, that

(i) the necessity is absolute necessity and it is not for mere convenient enjoyment of holding; and

(ii) particularly in case of a new way through another khatedar's holding, that absence of alternative means of access proved may, be order, allow the applicant, to lay pipeline, at least three feet beneath the surface of the land, along 'the line demarcated or pointed out by the tenant who holds that land, or to have a new way. not wider than thirty feet, through the land on such track as pointed out by the tenant who holds that land, and if no such track is pointed out, through the shortest or nearest route. or to enlarge or widen the existing way, not exceeding up to thirty feet, on payment of such compensation as may be determined by the Sub-Divisional Officer, in the prescribed manner, to the tenant who holds the land through which the right to lay pipeline or have a new way or enlarge or widen an existing way is granted or in lieu of payment of compensation, on transfer of land in exchange of equal area in the name of such tenant preferably having the same price and adjoining to his land.

(2) Where a right to have a new way or enlarge or widen an existing way is granted under sub-section (1), the tenancy in respect of the land comprising such way shall be deemed to have been extinguished and the land shall be recorded as rasta in the revenue records.

(3) The persons permitted to avail any of the facilities referred to in sub-section (1) shall not, by virtue of the said facility, acquire any other right in the holding through which such facility is granted.

5. इसी प्रकार राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-‘क’ के प्रावधानों की क्रियान्विति हेतु बनाये गये राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम 1955 के नियम 68 लगायत 70 का उद्धरण करना यहां प्रासंगिक प्रतीत होता है जो इस प्रकार है-

68. Application under Sec. 251-A. - An application for grant of permission under sub-sec. (1) of 251-A of the Act shall be in Form I.

69. Enquiry and disposal of application. - On receipt of an application in Form I, the Sub-Divisional Officer shall either inspect the site himself or get it inspected by an officer not below the rank of the Inspector Land Records and invite objections from the affected persons. The Sub-Divisional Officer after affording an opportunity of being heard to the parties and making such further enquiry, as he thinks necessary, if satisfied that-

(i) the necessity is absolute necessity and it is not for mere convenient enjoyment of holding; and

(ii) particularly in case of a new way through another khatedar's holding, that absence of alternative means of access is proved, may allow the application. The application shall be decided by the Sub-Divisional Officer within 90 days from the date of application.

70. Determination of compensation. - (1) The amount of compensation payable under sub-sec. (1) of Sec. 251-A of the Act, shall be determined in the following manner:-

(i) if the parties mutually agree on the amount of compensation, the Sub-Divisional Officer, shall determine the amount of compensation as per the mutual agreement.

(ii) if the parties do not agree mutually on the amount of compensation, the Sub-Divisional Officer shall determine the amount of compensation for the land equivalent to-

(a) two times of the rates recommended by the District Level Committee constituted under clause (b) of sub-rule (D) of Rule 2 of the Rajasthan Stamps Rules, 2004 or the rates determined by the State Government under sub-rule (2) of Rule 58 of the Rajasthan Stamps Rules, 2004, in the matter of a new way or enlargement or widening of an existing way; and

(b) 10% of the rates recommended by the District Level Committee; constituted under clause (b) of sub-rule (1) of Rule 2 of the Rajasthan Stamps Rules, 2004 or the rates determined by the State Government under sub-rule (2) of Rule 58 of the Rajasthan Stamps Rules, 2004, in the matter of laying underground pipeline.

(2) In addition to the value of land determined under clause (a) or (b) of sub-rule j (1), if any loss or damages caused due to removal of standing trees, crops or structure, the amount of actual loss or damages shall also be determined.

विश्लेषण

6. उक्त राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क एवं राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम-1955 के नियम-68 लगायत 70 के अवलोकन से स्पष्ट है कि धारा 251-क के अन्तर्गत कोई खातेदार अपनी खातेदारी आराजी तक कृषि कार्य बाबत आमद-रफत हेतु अन्य खातेदारों की खातेदारी आराजी में से होकर कुछ शर्तों के अधीन नवीन रास्ता रिकॉर्डेड अंकित करवा सकता है। इस हेतु उक्त राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क निम्न पूर्वशर्तों को आरोपित करती है जो इस प्रकार है-

1. प्रार्थी हेतु रास्ते बाबत अन्य रिकॉर्डेड रास्ते के विकल्प की अनुपस्थिति।
2. खातेदार की रास्ते बाबत आत्यान्तिक आवश्यकता।
3. लघुत्तम दूरी का नवीन मार्ग के विकल्प का प्रस्ताव।

वैकल्पिक रास्ते की अनुपलब्धता

7. राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-251-क एवं राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम-1955 के नियम-68 लगायत 70 द्वारा अध्यारोपित उक्त पूर्वशर्तों के तहत प्रकरण का विश्लेषण किया जाना अपेक्षित है। सर्वप्रथम प्रथम शर्त प्रार्थी हेतु रास्ते बाबत अन्य रिकॉर्डेड रास्ते के विकल्प की अनुपस्थिति का विश्लेषण किया जाना अपेक्षित है। उक्त प्रावधान के अंतर्गत सर्वप्रथम यह देखा जाना आवश्यक है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु कोई रिकॉर्डेड रास्ता उपलब्ध नहीं है अथवा नहीं। उक्त शर्त के विश्लेषण में निम्न तीन स्थितियां सामने आती हैं:-

1. प्रथम स्थिति में अगर प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु कोई रिकॉर्डेड रास्ता पूर्व से उपलब्ध है और उक्त रिकॉर्डेड रास्ता मौके पर चालू है तो ऐसी स्थिति में प्रार्थी को उक्त रिकॉर्डेड रास्ते से ही आवागमन करना चाहिए। इस स्थिति में उक्त आधार पर प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र खारिज किया जाना उचित प्रतीत होता है।
2. द्वितीय स्थिति में अगर प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु कोई रिकॉर्डेड रास्ता पूर्व से उपलब्ध है और उक्त रिकॉर्डेड रास्ता मौके पर अतिक्रमण की वजह से चालू नहीं है तो ऐसी स्थिति में प्रार्थी को उक्त रिकॉर्डेड रास्ते को मौके पर अतिक्रमण हटवाकर चालू करवाने के लिये संबंधित कानूनी प्रावधानों के तहत कार्यवाही करते हुए अनुतोष प्राप्त करना

चाहिए। इस स्थिति में उक्त आधार पर प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र खारिज किया जाना उचित प्रतीत होता है।

3. तृतीय स्थिति में अगर प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु कोई रिकॉर्डेड रास्ता उपलब्ध नहीं है तो उस स्थिति में प्रार्थी के प्रार्थना-पत्र को प्रथम शर्त को पुष्ट मानते हुए द्वितीय शर्त पर परखा जाना चाहिए।
8. उक्त प्रकरण में प्रार्थी ने अपने प्रार्थना पत्र के पैरा संख्या-2 में अन्य वैकल्पिक रास्ते की अनुपलब्धता का जिक्र किया गया है। प्रकरण में राजस्व ग्राम मघा की ढाणी तहसील नोखड़ा के राजस्व नक्शे में प्रासंगिक भाग के अवलोकन से प्रतीत होता है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु कोई वैकल्पिक रास्ता दर्ज रिकॉर्ड नहीं है। इस प्रकार प्रकरण उक्त तृतीय स्थिति के अंतर्गत आता है एवं शर्त संख्या 01 की पूर्णरूप से पुष्टि प्रतीत होती है।

रास्ते की आत्यांतिक आवश्यकता

9. प्रथम शर्त की पुष्टि पश्चात् द्वितीय शर्त खातेदार की रास्ते बाबत आत्यान्तिक आवश्यकता का विश्लेषण किया जाना अपेक्षित है। उक्त प्रावधान के अंतर्गत यह देखा जाना आवश्यक है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु वास्तव में रास्ते की आवश्यकता केवल सुविधाजनक नहीं होकर आवश्यकता आत्यांतिक है। उक्त शर्त के विश्लेषण में निम्न तीन स्थितियां सामने आती हैं:-

1. प्रथम स्थिति में प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ता पूर्व से ही दर्ज रिकॉर्ड/कट्टाण रास्ते/सड़क से आरम्भ होकर प्रार्थी की आराजी तक नवीन रास्ता चाहा गया है। ऐसी स्थिति में स्पष्ट होता है कि प्रार्थी द्वारा पूर्व से ही दर्ज रिकॉर्ड एवं विद्यमान/मौके पर चालू रास्ते से आगे अपनी खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु रास्ता चाहा गया है। इस स्थिति में प्रार्थी को अपनी खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु वास्तव में रास्ते की आवश्यकता केवल सुविधाजनक नहीं होकर आवश्यकता आत्यांतिक प्रतीत होती है। उक्त स्थिति में प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र द्वितीय शर्त की पुष्टि करता प्रतीत होता है।
2. द्वितीय स्थिति में प्रार्थी द्वारा पूर्व से ही प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंचने वाले लेकिन रिकॉर्ड में दर्ज नहीं होकर केवल मौके पर चालू कदीमी रास्ते/सड़क को धारा-251-ए के तहत विद्यमान मौके पर चालू कदीमी रास्ते/सड़क की चौड़ाई या विस्तारित चौड़ाई के रास्ते पर नवीन रिकॉर्डेड रास्ता चाहा गया है। ऐसी स्थिति में स्पष्ट होता है कि प्रार्थी द्वारा पूर्व से ही विद्यमान/मौके पर चालू रास्ते को ही रिकॉर्ड में दर्ज करवाने हेतु रास्ता चाहा गया है। इस स्थिति में प्रार्थी को अपनी खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु वास्तव में रास्ते की आवश्यकता केवल सुविधाजनक नहीं होकर आवश्यकता आत्यांतिक प्रतीत होता है। उक्त स्थिति में भी प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र द्वितीय शर्त की पुष्टि करता प्रतीत होता है।

3. तृतीय स्थिति में प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ता पूर्व से ही दर्ज रिकॉर्ड/कट्टाण रास्ते/सड़क से कोई संबंध नहीं रखता है तथा प्रार्थी द्वारा केवल एक या एक से अधिक खसरों से होकर नवीन रास्ता चाहा गया है। ऐसी स्थिति में प्रतीत होता है कि प्रार्थी द्वारा अपनी खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु सम्पूर्ण रास्ते को रिकॉर्ड में दर्ज करवाने हेतु अनुतोष नहीं चाहा गया है। यहां यह संशय उत्पन्न होता है कि प्रार्थी द्वारा गलत मंशा से प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया गया है। इस स्थिति में प्रार्थी को अपनी खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु वास्तव में रास्ते की आवश्यकता केवल सुविधाजनक है। उक्त स्थिति में प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र द्वितीय शर्त की पुष्टि नहीं करता प्रतीत होता है।

10. उक्त प्रकरण में प्रार्थी ने अपने प्रार्थना पत्र के पैरा संख्या-2 में रास्ते की आत्यांतिक आवश्यकता का जिक्र किया गया है। उक्त प्रकरण में राजस्व ग्राम मघा की ढाणी तहसील नोखड़ा के राजस्व नक्शे में प्रासंगिक भाग के अवलोकन से प्रतीत होता है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु कोई वैकल्पिक रास्ता दर्ज रिकॉर्ड नहीं है। उक्त प्रकरण स्थिति संख्या 01 के अंतर्गत आता है। इस प्रकार प्रकरण में प्रार्थी को नवीन रास्ते की आवश्यकता केवल सुविधाजनक नहीं होकर आत्यांतिक प्रतीत होती है। इस प्रकार शर्त संख्या 02 की पूर्णरूप से पुष्टि होती है।

लघुत्तम मार्ग का निर्धारण

11. अतः उक्त विश्लेषण के अनुसार शर्त संख्या 1 व 2 की पूर्णरूप से पुष्टि होती है। राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क तथा राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम-1955 के नियम-68 लगायत 70 के अवलोकन से स्पष्ट है कि राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क के तहत आरोपित शर्त संख्या 1 व 2 की पूर्णरूप से पुष्टि होने के पश्चात् न्यायालय द्वारा तृतीय शर्त लघुत्तम दूरी का नवीन मार्ग के विकल्प का प्रस्ताव बिन्दु पर विश्लेषण किया जाना है कि उक्त नवीन रास्ता किस आराजी में से होकर किस रूट से होकर कितनी चौड़ाई का लघुत्तम मार्ग रास्ता का अनुतोष स्वीकार किया जाना है। उक्त प्रावधान के अंतर्गत यह देखा जाना आवश्यक है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु प्रार्थना-पत्र में आवेदित रास्ते ही लघुत्तम रास्ता है अथवा अप्रार्थी/तहसीलदार मौका रिपोर्ट द्वारा लघुत्तम रास्ते का अन्य कोई विकल्प प्रस्तावित किया गया है। उक्त शर्त के विश्लेषण में निम्न दो स्थितियां सामने आती हैं:-

1. प्रथम स्थिति में प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ता ही लघुत्तम रास्ते का विकल्प है। इस हेतु संबंधित तहसीलदार की मौका रिपोर्ट/स्वयं पीठासीन अधिकारी के मौका निरीक्षण से उक्त शर्त की पुष्टि किया जाना आवश्यक है। उक्त स्थिति में प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते को ही लघुत्तम रास्ता माना जाना व्यावहारिक/कानूनन प्रतीत होता है।
2. द्वितीय स्थिति में प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ता के अतिरिक्त अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते/नजदीकी रास्ते का विकल्प प्रस्तावित किया जाता है। ऐसी स्थिति में तहसीलदार की मौका रिपोर्ट/स्वयं पीठासीन अधिकारी

के मौका निरीक्षण एवं पत्रावली के तथ्यों व राजस्व रिकॉर्ड के अवलोकन के साथ-साथ निम्न तथ्यों को ध्यान में रखते हुए लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते/नजदीकी रास्ते के मार्ग का निर्धारण किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है:-

स्थिति	विवरण
1.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते की लम्बाई एवं अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प की लम्बाई के अंतर की सीमा।
2.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते की लम्बाई एवं अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प की लम्बाई के अंतर की व्यावहारिकता।
3.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प की प्रार्थी की रहवास/घर के संदर्भ में व्यावहारिकता।
4.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प में आने वाली आराजी के रकबे की अप्रार्थी की खातेदारी आराजी के रकबे के संदर्भ में व्यावहारिकता।
5.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प में आने वाली आराजी के रकबे की क्षतिपूर्ति की प्रकृति (राशि/भूमि के बदले भूमि) के संदर्भ में व्यावहारिकता।
6.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर अप्रार्थीगणों के मध्य सहमति/असहमति के संदर्भ में व्यावहारिकता।
7.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर प्रार्थी द्वारा पूर्व से आमद-रफ्त के संदर्भ में व्यावहारिकता।
8.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प से अन्य काश्तकारों को होने वाले अप्रत्यक्ष लाभ के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।
9.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर निर्माण/वृक्ष व अन्य सम्पत्तियों की अवस्थिति के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।

10.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प से अप्रार्थी के खसरे/संयुक्त खसरों/मौके पर एकल चकबंदी के खसरों के विखण्डन के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।
11.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर आने वाले खसरे/खसरों की संख्या के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।
12.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर आने वाले खसरे/खसरों के खातेदारों की एकलता/बहुलता के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।
13.	अन्य बिन्दु जो न्यायालय प्रकरण-दर-प्रकरण आवश्यक समझे।

12. प्रकरण में तहसीलदार नोखड़ा द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/1630 दिनांक 18.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट में प्रार्थी की खातेदारी आराजी मौजा खारडी बेरी पटवार हल्का धोलानाडा तहसील नोखड़ा तक पहुंच हेतु रास्ते के संबध में दो विकल्प प्रस्तावित किये है। तहसीलदार नोखड़ा द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/1630 दिनांक 18.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट में उक्त विकल्पों का तुलनात्मक विवरण निम्न प्रकार है:-

बिन्दु	रूट संख्या-01		रूट संख्या-02	
विवरण	अप्रार्थीगण की आराजी खसरा संख्या 676/247 मौजा खारडी बेरी पटवार हल्का धोलानाडा से होकर लाल रंग से अंकित		अप्रार्थीगण की आराजी खसरा संख्या 676/247 मौजा खारडी बेरी पटवार हल्का धोलानाडा से होकर आसमानी रंग से अंकित	
लम्बाई	खसरा 676/247 से	(65 मीटर)	खसरा 676/247 से	(90 मीटर)
	कुल लम्बाई	65 मीटर	कुल लम्बाई	90 मीटर
चौड़ाई	07 मीटर		07 मीटर	
रकबा	0.0455 है०		0.0630 है०	
निर्माण/वृक्ष	नहीं		नहीं	
स्थगन	नहीं		नहीं	

13. इस प्रकार राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क के तहत आरोपित तीसरी शर्त के अनुसार नवीन रास्ते हेतु लघुत्तम मार्ग का विकल्प पर पैरा संख्या-11 परिस्थितियों के दृष्टिकोण से विचार किया जाना आवश्यक है। प्रकरण में तहसीलदार

नोखड़ा द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/1630 दिनांक 18.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट द्वारा प्रस्तावित दोनों मार्गों का तुलनात्मक विश्लेषण आवश्यक है। प्रकरण में तहसीलदार नोखड़ा द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/1630 दिनांक 18.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट द्वारा प्रस्तावित रूट संख्या-02, रूट संख्या-01 की तुलना में 25 मीटर लम्बा है। रूट संख्या-02 के तहत रूट संख्या-01 की तुलना में अधिक रकबा भूमि निहित होगी।

14. साथ ही तहसीलदार नोखड़ा द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/1630 दिनांक 18.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट तथा पत्रावली के अवलोकन पश्चात् प्रकरण में राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क के तहत आरोपित तीसरी शर्त के अनुसार नवीन रास्ते हेतु लघुत्तम मार्ग का विकल्प पर पैरा संख्या-11 परिस्थितियों के दृष्टिकोण से विश्लेषण निम्न प्रकार है:-

स्थिति	विवरण	रूट संख्या-01	रूट संख्या-02	प्राथमिकता
1.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते की लम्बाई एवं अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प की लम्बाई के अंतर की सीमा।	65 मीटर	90 मीटर	रूट संख्या-01
2.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते की लम्बाई एवं अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प की लम्बाई के अंतर की व्यावहारिकता।	रूट संख्या-02, रूट संख्या-01 की तुलना में 90 मीटर लम्बा है।		रूट संख्या-01
3.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प की प्रार्थी की रहवास/घर के	मुताबिक तहसीलदार मौका निरीक्षण दोनों रूट पर कोई निर्माण नहीं है।		दोनों रूट उपयुक्त

	संदर्भ में व्यावहारिकता।			
4.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प में आने वाली आराजी के रकबे की अप्रार्थी की खातेदारी आराजी के रकबे के संदर्भ में व्यावहारिकता।	0.0455 है0	0.0630 है0	रूट संख्या-01
5.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प में आने वाली आराजी के रकबे की क्षतिपूर्ति की प्रकृति (राशि/भूमि के बदले भूमि) के संदर्भ में व्यावहारिकता।	प्रार्थीगण की आराजी खसरा संख्या 676/252, 672/252, 675/252, 669/252 तथा अप्रार्थीगण की आराजी खसरा संख्या 676/247 आपस में सेढे अवस्थित होने के कारण भूमि के बदले भूमि का विकल्प उपलब्ध है।	प्रार्थीगण की आराजी खसरा संख्या 676/252, 672/252, 675/252, 669/252 तथा अप्रार्थीगण की आराजी खसरा संख्या 676/247 आपस में सेढे अवस्थित होने के कारण भूमि के बदले भूमि का विकल्प उपलब्ध है।	रूट संख्या-01 एवं 02 दोनों उपयुक्त
6.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर अप्रार्थीगणों के मध्य सहमति/असहमति के संदर्भ	उक्त दोनो ही प्रस्तावित मार्गों पर प्रार्थीगणों व अप्रार्थीगणों के मध्य कोई सहमति नही है।		—

	में व्यावहारिकता।			
7.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर प्रार्थी द्वारा पूर्व से आमद-रफत के संदर्भ में व्यावहारिकता।	—	—	—
8.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प से अन्य काश्तकारों को होने वाले अप्रत्यक्ष लाभ के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।	नहीं	नहीं	—
9.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर निर्माण/वृक्ष व अन्य सम्पतियों की अवस्थिति के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।	नहीं	नहीं	—
10.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प से	इस मार्ग पर अप्रार्थी के खसरों का विखण्डन हो रहा है।	नहीं	रूट संख्या 02

	अप्रार्थी के खसरे/संयुक्त खसरो/मौके पर एकल चकबंदी के खसरो के विखण्डन के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।			
11.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर आने वाले खसरे/खसरो की संख्या के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।	—	—	—
12.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर आने वाले खसरे/खसरो के खातेदारों की एकलता/बहुलता के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।	—	—	—
13.	अन्य बिन्दु जो न्यायालय प्रकरण-दर-प्रकरण आवश्यक समझे।	नहीं	नहीं	—

15. प्रकरण में उक्त विश्लेषण के साथ प्रकरण में यथासंभव समस्त तथ्यों का विश्लेषण के पश्चात् रूट संख्या-02 ही लघुत्तम/नजदीकी मार्ग का व्यावहारिक विकल्प प्रतीत होता है। क्योंकि रूट संख्या 01 से अप्रार्थी के खसरे का विखण्डन होता है। इस कारण रूट संख्या 01 लघुत्तम मार्ग होते हुए भी व्यावहारिक रूट नहीं है। मार्ग की परिभाषा में खेतों के मध्य से होकर गुजरने वाले लघुत्तम हवाई दूरी वाले रूट को शामिल नहीं माना जा सकता है। मार्ग की परिभाषा में खेतों की मेड़ के सहारे-सहारे ही रूट को मार्ग की परिभाषा में माना जाना व्यावहारिक है। अतः राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क के तहत आरोपित तीसरी शर्त के अनुसार नवीन

रास्ते हेतु लघुत्तम/नजदीकी मार्ग का विकल्प तहसीलदार नोखड़ा द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/1630 दिनांक 18.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट द्वारा प्रस्तावित आसमानी रंग से अंकित का विकल्प रूट संख्या-02 को स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है।

निष्कर्ष

16. उक्त प्रकरण में राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क के विधिक प्रावधानों के सन्दर्भ में प्रार्थीगण हेतु रास्ते की अत्यान्तिक आवश्यकता एवं वैकल्पिक रिकार्डेड रास्ते हेतु अनुपलब्धता एवं तहसीलदार नोखड़ा द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/1630 दिनांक 18.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट मय नजरी नक्शा के आधार पर प्रार्थी का प्रार्थना पत्र राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 251-क काबिल-ए स्वीकार है। अतः तहसीलदार नोखड़ा द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/1630 दिनांक 18.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट मय नजरी नक्शा के अनुसार खसरा संख्या 678/247 व खसरा संख्या 248/2 की मेड़ के सहारे अप्रार्थी के खसरा संख्या 678/247 में से होकर आगे खसरा संख्या 682/674 व खसरा संख्या 670/247 की मेड़ के सहारे खसरा संख्या 682/674 में से होकर आगे कट्टान रास्ते तक 07 मीटर चौड़ाई में नवीन गैर मुमकिन रास्ता नियमानुसार भूमि एवं निर्माण, अगर कोई हो तो, की क्षतिपूर्ति राशि भुगतान पश्चात् राजस्व रिकार्ड में दर्ज किया जाना न्यायसंगत प्रतीत होता है। अतः

आदेश है कि

राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क के अन्तर्गत प्रार्थीगण का प्रार्थना पत्र तहसीलदार नोखड़ा द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/1630 दिनांक 18.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट मय नजरी नक्शा के अवलोकन पश्चात् विश्लेषित निष्कर्ष अनुसार प्रार्थीगण हेतु रास्ते की अत्यान्तिक आवश्यकता एवं वैकल्पिक रिकार्डेड रास्ते हेतु अनुपलब्धता के आधार पर स्वीकार किया जाता है एवं तहसीलदार नोखड़ा को आदेश दिये जाते हैं कि दिनांक 16.09.2024 की मौका जाँच रिपोर्ट में मौजा खारड़ी बेरी पटवार हल्का धोलानाडा की आराजी हाल खसरा संख्या 678/247 व खसरा संख्या 248/2 की मेड़ के सहारे अप्रार्थी के खसरा संख्या 678/247 में से होकर आगे खसरा संख्या 682/674 व खसरा संख्या 670/247 की मेड़ के सहारे खसरा संख्या 682/674 में से

होकर आगे कटान रास्ते तक 07 मीटर चौड़ाई के रास्ते में आयी भूमि एवं निर्माण के एवज में राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम 1955 के नियम-70 के अनुसार क्षतिपूर्ति राशि आंकलित कर नियमानुसार क्षतिपूर्ति राशि के नियमानुसार भुगतान पश्चात् उक्त नवीन रास्ते को खाता संख्या-1 सिवायचक में सार्वजनिक उपयोग हेतु किस्म गैर मुमकिन रास्ता दर्ज कर अंकन किया जावे। दिनांक 07.11.2024 की मौका जाँच रिपोर्ट व नजरी नक्शा निर्णय का अनन्य भाग रहेगा।

उक्त निर्णय की पालना हेतु एक प्रति तहसीलदार नोखड़ा को भिजवायी जावे।

यह आदेश आज दिनांक 10.02.2025 को लिखवाया जाकर सरे-इजलास सुनाया गया एवं अधोहस्ताक्षकर्ता की मुहर व हस्ताक्षर से जारी किया गया।

(केशव कुमार मीना आर.ए.एस)
सहायक कलक्टर
गुढामालानी-बाड़मेर

